UG Semester - II (2024-2028)

Paper - MJC

Topic - Misra Ka Rajnitik Itihas

Question - प्राचीन मिस्र के राजनीतिक इतिहास का वर्णन करे ।

मिस्र के इतिहास का प्रथम काल 'प्राचीन राज्य युग' के नाम से जाना जाता है जिसे पिरामिड युग के नाम से भी इतिहासकार पुकारते है। प्रागैतिहासिक युग में मिस्र अनेक छोटे - छोटे नगर राज्यों मे विभक्त था, जिन्हें 'नोम' कहते थे। धीरे - धीरे साम्राज्यवादी लिप्सा ने छोटे - छोटे राज्यो का अस्तित्व समाप्त कर दिया। 3400 B.C.E. के आस-पास तक मिस्र में मात्र दो राज्य रह गये - उत्तरी मिस्र के राज्य और दक्षिणी मिस्र का राज्य।

दक्षिण मिस्र के राज्य को नील की घाटी का राज्य' भी कहा जाता था इसी प्रकार उत्तरी मिस्र के राज्य को नील के मुहाने का राज्य कहा जाता था। उत्तरी मिस्र की राजधानी 'बुटो' नामक नगर थी। ऐसा माना जाता है कि उत्तरी मिस्र की रक्षा 'नागदेवी' करती थी। इस देवी का खास रंग लाल था। इसलिए उत्तरी मिस्र के शासक लाल रंग का मुकुट पहनते थे।

पेपिरस का गुच्छा और मधुमक्खी 'राजचिन्ह' माने जाते थे। शासकों के राज्य प्रसाद को 'पे' कहा जाता था और राज्य का कोषागार - 'लाल भवन' कहा

जाता है था दक्षिणी मिस्र की राजधानी 'नेखेब' नगर थी और इसका विशिष्ट रंग श्वेत था अतः दक्षिणी मिस्र के शासक श्वेत मुकुट पहनते थे। उनका राजभवन 'श्वेत' कहलाता था। और कोषागार 'श्वेत भवन' कहलाता था। इस राज्य की संरक्षिका नेखबत थी जो गृह देवी थी। लिली पौधो की शाखा इस क्षेत्र का राज्य चिन्ह थी। आगे चलकर मेनिस (Menes) ने इन दोनो राज्यो को एक मे मिला दिया। इन दोनो राज्यों का एकीकरण 3400 BCE में हुआ था। अतः मिस्र का राजनीतिक इतिहास यहीं से शुरु होता है।

प्रथम राजवंश — मिस्र के प्रथम राजवंश का संस्थापक मेनिस था। जिसने उत्तरी और दक्षिणी मिस्र का संयुक्त कर के राजनीतिक सत्ता कायम की और शासन की नींव डाली। वह दक्षिणी मिस्र के तेनी नामक स्थान का रहने वाला था। प्रथम राजवंश के अन्य राजाओं में नरमेर मह्टा आदि के नाम आते है परन्तु इस राजवंश के बारे में बहुत अधिक जानकारी नहीं मिलती है।

द्वितीय राजवंश :- प्रथम राजवंश के बाद द्वितीय राजवंश के शासकों ने मिस्र पर शासन किया। इन दोनों राजवंशों ने लगभग 420 वर्ष (3407 - 2983 BCE) तक राज्य किया और इन वर्षों में 18 राजा गद्दी पर बैठे। इन राजाओं ने मेमिस द्वारा स्थापित किए गए संयुक्त राज्य को स्थायित्व देने का प्रयास किया। उन्होंने विदेशी आक्रमणकारियों से अपने देश एवं प्रजा की रक्षा की। लिबियन और सेमेटिक जाति के लोग उत्तरी मिस्र में निरंतर विद्रोह किया करते थे। उनके विद्रोह का दमन करते उन शासकों ने देश में शांति-व्यवस्था कायम की। द्वितीय राजवंश के काल में मिस्र का विदेशों से भी सांस्कृतिक संबंध कायम हुआ। सिनाई की ताम्र खानों पर अधिकार करके शासकों अत्यधिक प्रसिद्धी प्राप्त की। इस काल में मिस्र का संबंध इजियन प्रदेश से भी था। होरस इस युग का महान देवता था। उनकी ही तरह दूसरा देवता सेत था। नेखबत और नागदेवी की भी पूजा होती थी।